Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 9469

Unique Paper Code : 62051202

Name of the Paper : MIL, Hindi Bhasha Aur Sahitya – A

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi A – CBCS**

A

Semester : II

समय : 3 घण्टे

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) कबीर इस संसार कों, समझाऊँ कै बार।

पूँछ जु पकड़ै भेद की, उतर्‌या चाहै पार।।

जैसी मुष तैं नीकसै, तैसी चालै नाहिं।

मानिष नहीं ते स्वान गति, बांध्या जमपुर जांहिं।।

L

अथवा

P.T.O.

मण थें परस हरि रे चरण ।।

सुभग सीतल कँवल कोमल, जगत ज्वाला हरण ।

जिण चरण प्रह्लाद परस्याँ, इन्द्र पदवी धरण ।

जिण चरण ध्रुव अटल करस्याँ, सरण असरण सरण ।

जिण चरण ब्रह्मांड भेट्याँ, नखसिखाँ श्री धरण ।

जिण चरण कालियाँ णाथ्याँ, गोपी लीला करण ।

जिण चरण गोबरधन धारयाँ, गरब मधवा हरण ।

दासि मीरा लाला गिरधर, अगम तारण तरण ।

(ख) चल्यौ जाइ, ह्याँ को करै हाथिनु के व्यापार ।

नहिं जानतु, इहिं पुर बसैं धोबी, ओड़, कुँभार ।।

नीच हियैं हुलसे रहैं गहे गेंद के पोत ।

ज्यौं ज्यौं माथैं मारियत, त्यौं त्यौं ऊँचे होत ।।

अथवा

रूपनिधान सुजान लखें बिन आंखिन दीठि हि पीठि दई है ।

ऊखिल ज्यौं खरकै पुतरीन मैं, सूल की मूल सलाक भई है ।

ठौर कहूँ न लहै ठहरानि को मूदें महा अकुलानिमई है ।

बूड़त ज्यौ घनआनँद सोचि, दई बिधि ब्याधि असाधि नई है ।।

(ग) अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है

न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है ।

इस तत्त्व पर ही कौरवों से पाण्डवों का रण हुआ,

जो भव्य भारतवर्ष के कल्पान्त का कारण हुआ ।।

अथवा

अमल धवलगिरि के शिखरों पर

बादल को घिरते देखा है ।

छोटे-छोटे मोती जैसे

उसके शीतल तुहिन कणों को

मानसरोवर के उन स्वर्णिम

कमलों पर गिरते देखा है

बादल को घिरते देखा है ।

2. किसी **एक** कवि का साहित्यिक परिचय दीजिए : (10)

(क) बिहारी ;

(ख) घनानंद ।

3. कबीर के दोहों के आधार पर उनकी भक्ति के स्वरूप पर प्रकाश डालिए । (10)

9469 4

अथवा

मीरा के पदों का प्रतिपाद्य लिखिए ।

4.

4. 'मेरे नगपति मेरे विशाल' ('हिमालय के प्रति') कविता के मूल कथ्य पर विचार कीजिए । (10)

अथवा

'जयद्रथ वध' के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त जी की काव्य भाषा का विचार कीजिए ।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (5×3=15)

(i) हिंदी भाषा की व्युत्पत्ति ;

(ii) ब्रजभाषा ;

(iii) आदिकालीन साहित्य की विशेषताएँ ;

(iv) कृष्ण भक्ति धारा ;

(v) रीतिमुक्त काव्य ;

(vi) नई कविता ।

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 9470

Unique Paper Code : 62051203

Name of the Paper : Hindi B

Name of the Course :

Semester :

Duration : 3 Hours

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. किन्हीं **तीन** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10 + 10 + 10 = 30)

(क) यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान ।
शीश दिए जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान ।।

अथवा

कृपा सिन्धु बोले मुस्काई । सोइ करू जेहि तव नाव न जाई ।।
बेगी आनु जल पाय पखारू । होत बिलंबु उतारहि पारू ।।

जासु नाम सुमिरत एक बारा । उतरहिं नर भव सिन्धु अपारा ।।

सोइ कृपालु केवटहि निहोरा । जेहिं जगु किए तिहु पगहु ते थोरा ।।

(ख) बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ ।

सौंह करै भौंहनु हँसे, दैन कहे, नटी जाइ ।।

अथवा

इंद्र जिमि जम्भ पर बाड़व सुंअभ पर, रावण सदम्भ पर रघुकुल राज हैं ।

पौन बारिवाह पर संभु रतिनाह पर, ज्यौं सहसबाहु पर राम द्विजराज हैं ।

दावा द्रुमदंड पर, चीता मृग झुंड पर, भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज हैं ।

तेज तम अंस पर कान्ह जिमी कंस पर, त्यों मलेच्छ बंस पर सेर सिवराज हैं ।।

(ग) प्रभु ईसा की क्षमाशीलता

नबी मुहम्मद का विश्वास

जीव दया जिनवर गौतम की

आओ देखो इसके पास ।

अथवा

काट अंध-उर के बंधन-स्तर

बहा, जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;

कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर

जगमग जग कर दे !

2. तुलसीदास **अथवा** कबीर का साहित्यिक परिचय दीजिए । (10)

3. भूषण **अथवा** बिहारी के काव्य का सार लिखिए । (10)

4. 'वर दे वीणावादिनी' अथवा 'बालिका का परिचय' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए । (10)

5. (क) निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर टिप्पणी लिखिए : (5)

(i) हिन्दी के उद्‌भव का सामान्य परिचय

(ii) हिन्दी के अतिरिक्त किसी एक आधुनिक भारतीय भाषा का परिचय (5 + 5 = 10)

(ख) किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए :

(i) चारण काव्य

(ii) सूफी काव्य

(iii) रीतिमुक्त काव्यधारा

(iv) भारतेंदु युग

Sr. No. of Question Paper : 9471 **IC**

Unique Paper Code : 62051204

Name of the Paper : Hindi – C

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours
समय : 3 घण्टे

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) प्रभु तुमको कर दान किए ने
सब वांछित वस्तु विधान किए
तुम प्राप्त करो उनको न अहो
फिर है यह किसका दोष कहो
समझो न अलभ्य किसी धन को
नर हो, न निराश करो मन को ।

P.T.O.

3730T

अथवा

तब से उनको रहा देखता धीरे-धीरे
अनगिनत पत्तों से लद, भर गयी झाड़ियाँ,
हरे-भरे टंग गए मखमली कई चँदोवे।
बेलें फैल गयीं बल खा, आँगन में लहरा,
और सहारा लेकर बाड़े की टट्टी का
हरे हरे सौ झरने फूट पड़े ऊपर को,
मैं अवाक् रह गया-वंश कैसे बढ़ता है!

(ख) (i) कबीर संगत साध की, बेगि करीजै जाइ।
दुरमति दूर गंवाइसी, देसी सुमति बनाइ ।।

(ii) गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपने गोंबिंद दियो बताय ।।

अथवा

ऊधो मन न भए दस बीस।
एक हुतो सो गयौ स्याम संग, को आराधे ईस।
इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।

तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारैं नंद-नंदन बिनु, और नहीं जगदीस।

(ग) (i) थोरे ही गुन रीझते, बिसराई वह बानि।
तुमहूँ कान्ह मनो भए, आज काल्हि के दानि ।।

(ii) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परे, स्याम हरित दुति होय ।।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारिये।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारिये ।।
एक ही जीव हुतौ सु तौ वार्‌यो सुजान सकोच औ सोच सहारियै।
रोकी रहे न दहै घनआनँद बावरी रीझ के हाथनि हारियै ।।

2. कबीरदास **अथवा** सूरदास का साहित्यिक परिचय लिखिए। (10)

3. घनानंद की काव्यानुभूति पर विचार कीजिए। (10)

अथवा

बिहारी के काव्य के भाव पक्ष की विवेचना कीजिए।